515

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

टेस्ट-7

(प्रश्न पत्र-II)

DTVF / OPT-24 **HL-2407**

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक* : 250 *Maximum Marks* : 250

नाम (Name): आनंद कुमार मीना

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): ______ ई-मेल पता (E-mail address): ______ टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): HL-24,07 ______ रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]: 0 8 2 5 6 6 3

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

दृष्टि The Vision

खण्ड - क

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

1. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) राम नाम के पटंतरै, देबे कौं कुछ नाहिं।

क्या ले गुरु संतोषिए, हौंस रही मन माहिं।।

संदर्भ एवं प्रसंग

व्याख्येय काव्यांश डॉ. श्यामसुंदर दास द्वारा संकलित 'कबीर ग्रंथावली' से उद्धृत है जिसकी रचना प्रमुख संतकवि कबीर द्वारा की गई है

उपरोक्त पंक्तियों में राम नाम की महिमा व गुरु के महत्त्व को उजागर किया गया है

भावार्थ एवं विशेषार्थ

कबीर कहते हैं कि राम का नाम लेने वाले के पास देने के लिए कुछ नहीं मिलेगा लेकिन उसके मन में आत्मसंतुष्टि का भाव हमेशा रहता है

इन पंक्तियों में कबीर राम के स्मरण को भी वास्तविक मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बतला रहे हैं

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

काव्यगत सौंदर्य

1. सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग जिसमें पहंतरे जैसे देशज शब्द का उपयोग किया गया है।

2. 'राम नाम ....' में अनुप्रास अलंकार।

3. दोहा छंद का प्रयोग।

4. वर्तमान समय में उभरती अतियांत्रिकता व अतिभौतिकतावादी प्रवृत्ति के संदर्भ में राम नाम सुमिरण व्यक्ति आत्मसंतोष के मार्ग पर ले जा सकती है।

(ख) दूर करहु बीना कर धरिबो।

मोहे मृग नाहीं रथ हाँक्यो, नाहिंन होत चंद को ढरिबो।।

बीती जाहि पै सोई जानै कठिन है प्रेमपास को परिबो।

जब तें बिछुरे कमलनयन, सखि, रहत न नयन नीर को गरिबो।।

सीतल चंद अगिनि सम लागत कहिए धीर कौन बिधि धरिबो।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ एवं प्रसंग

उपरोक्त काव्य पंक्तियाँ लोकमंगल के कवि तुलसीदास के महाकाव्य 'रामचरितमानस' (सुंदर कांड) से ली गई हैं। इन पंक्तियों में सीता लंका में राम के विरह की पीड़ा को रावण की एक दासी से साझा कर रही है।

भावार्थ एवं विशेषार्थ

सीता कहती है कि जबसे कमनयन राम मुझसे अलग हुए हैं मेरे आँसू बहते हुए नहीं रुकते। आग और शीतलता दोनों एक समान लगते हैं। अब तुम्हीं बताओ मैं धैर्य कैसे रखूँ।

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

काव्यगत वैशिष्ट्य

1. संस्कृतनिष्ठ अवधी जो कि जायसी की ठेठ अवधी से भिन्न है।

2. अलंकार
अनुप्रास – 'रहत न नयन नीर'
उपमा – कमलनयन

3. ऐसा ही विरह नागमती का रत्नसेन के जाने पर दिखता है पर फारसी प्रभाव के कारण उसमें ऊहात्मकता आ गई है।

4. रूपक की योजना – 'मोह मृग नाहीं_'

5. इन्हीं विशेषताओं के कारण आचार्य शुक्ल सीता विरह की उदात्तता को नागमती विरह से श्रेष्ठ घोषित करते हैं।

(ग) बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ।
राम बियोगी ना जिवै, जिवै त बौरा होई।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ एवं प्रसंग

व्याख्येय पंक्तियाँ संतकाव्यधारा के प्रतिनिधि कवि कबीरदास द्वारा रचित है। इसका संकलन डॉ. श्यामसुंदर दास द्वारा 'कबीर ग्रंथावली' में किया गया है।

'विरह कौ अंग' से ली गई इन पंक्तियों में कबीर भक्त के राम से विरह की पीड़ा को उजागर कर रहे हैं।

भावार्थ एवं विशेषार्थ

कबीर कहते हैं कि राम के विरह की पीड़ा से ग्रस्त व्यक्ति का कोई इलाज नहीं है। राम से विरह के बाद भक्त ज़िंदा ही नहीं रह सकता और अगर बच जाए तो वह पागल

दृष्टि The Vision

हो जाएगा।

काव्यगत वैशिष्ट्य

1. आमजन की भाषा सधुक्कड़ी का प्रयोग।
2. सामाजिक समस्याओं पर चोट करते समय जो भाषायी कठोरता दिखती है वह भक्ति काव्य में आश्चर्यजनक रूप से माधुर्यपूर्ण हो जाती है। यही कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' बनाती है।
3. दोहा छंद का प्रयोग।
4. 'जिव' की आवृत्ति गंभीरता को बढ़ाती है।
5. रूपक की योजना - बौरा ....
6. वर्तमान में ~~भी~~ मानव भक्ति मार्ग से दूरी के कारण ही चिंताओं से ग्रस्त है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(घ) चढ़ा असाढ़ गँगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।
धूम स्याम धौरे घन धाए। सेत धुजा बगु पाँति देखाए।
खरग बीज चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरिसै घन घोरा।
अद्रा लाग बीज भुइँ लेई। मोहि पिय बिनु को आदर देई।
औनै घटा आई चहुँ फेरी। कंत उबारु मदन हौं घेरी।
दादुर मोर कोकिला पीऊ। करहिं बेझ घट रहै न जोऊ।
पुख नछत्र सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाँह मंदिर को छावा।
जिन्ह घर कंता ते सुखी तिन्ह गारौ तिन्ह गर्व।
कंत पियारा बाहिरें हम सुख भूला सर्व।।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ एवं प्रसंग

'पद्मावत' हिंदू गृहिणी की विरहवाणी है और इसी कारण हिंदी साहित्य को जायसी की अद्वितीय देन है। 'नागमती वियोग खंड' से उद्धृत इन काव्य पंक्तियों में आषाढ़ के महीने में नागमती की विरह व्यथा को दर्शाया गया है।

भावार्थ एवं विशेषार्थ

प्रोषितपतिका नायिका नागमती रत्नसेन के सिंहलद्वीप जाने पर विरह में इस कदर परेशान है कि आषाढ़ के घने बादल

वर्षा के बाणों से उसके हृदय भेद रहे हैं। बिजली तलवार बन गई है और बिना प्रिय के कोई आदर भी नहीं है रहा। नागमती को कोयल की बोली भी परेशान कर रही है और उसे लगता है जिनके घर में पति मौजूद है केवल वही पत्नियां सुखी है।

काव्यगत वैशिष्ट्य

1. अवधी की खालिस बेमेल मिठास मौजूद है।
2. कड़वक बद्ध शैली (चौपाई के साथ दोहा)
3. रूपक की योजना
4. प्रकृति का आलंबन विरह पीड़ा के भाव को उजागर करने हेतु।
5. अलंकार - अनुप्रास (धूम स्याम धौरे ——) रूपक, उपमा
6. प्रेमाख्यान काव्य
7. बारहमासा छंद का प्रयोग

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ङ) पैदा हुआ अभिमान पहले चित्त में निज शक्ति का,
जिससे रूका वह स्त्रोत सत्वर शील, श्रद्धा, भक्ति का।
अविनीतता बढ़ने लगी, अनुदारता आने लगी,
पर-बुद्धि जागी, प्रीति भागी, कुमति बल पाने लगी।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ एवं प्रसंग

'आधुनिक युग के तुलसी' मैथिलीशरण गुप्त का काव्य नवजागरण का काव्य है जिसमें वे अतीत का विश्लेषण वर्तमान की व्याख्या एवं भविष्य हेतु आदर्श प्राप्ति के लिए करते हैं 'भारत - भारती' से ली गई इन पंक्तियों में भी गुप्त जी भारतीय समाज व सभ्यता के कारणों का विश्लेषण कर रहे हैं।

भावार्थ एवं विशेषार्थ

गुप्त जी भारतीयों के पतन का कारण मन में उपजी दंभता को मानते है जिस के कारण हमने शील, श्रद्धा एवं भक्ति जैसे मौलिक मूल्यों का त्याग कर दिया उसी कारण से हम अनुदार होकर

अतीत के प्रेम मार्ग को छोड़ कुमति के रास्ते पर बढ़ते चले गए।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

काव्यगत वैशिष्ट्य

1. आरंभिक खड़ी बोली कुछ कर्कशता लिए हुए है।
2. ~~(लेखे)~~ हरिगीतिका छंद
3. लयात्मकता बनी हुई है।
4. ओजपूर्ण काव्य है।
5. इन्हीं विशेषताओं के कारण 'भारत-भारती' को 'आधुनिक युग की गीता' कहा गया है।
6. नवजागरण का काव्य
7. अलंकार - अनुप्रास (प्रीति सत्वर शील--)

दृष्टि The Vision

2. (क) 'उपालंभ के क्षेत्र में जो अद्भुत सफलता सूर को मिली है, शेष कवि उसके आसपास भी नहीं पहुँच सके हैं।'-क्या सूर का काव्य इस कथन की पुष्टि करता है? विश्लेषणात्मक उत्तर दीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) 'तुलसी की कविता 'रामचरितमानस' में संभवतः सबसे अधिक तन्मय होती है राम-भरत के मिलाप के अवसर पर।'- इस बात की सोदाहरण परीक्षा कीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) बिहारी के काव्य के संदर्भ में 'गागर में सागर' की उक्ति के औचित्य पर विचार कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

3. (क) कबीर की भक्ति-भावना का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

कबीर मूलत: भक्त हैं और समाज सुधारक, कवि जैसे रूप तो उसके बाइप्रोडक्ट हैं। इन्हीं कारणों से कबीर की भक्ति संपूर्ण संतकाव्यधारा में विशिष्ट है।

कबीर की भक्ति निर्गुण भक्ति का आधार लिए हुए है वे स्पष्ट शब्दों में कहते हैं कि उनके राम सगुण नहीं हैं-

दशरथ-सुत तिहुं लोक बखाना,
राम नाम का मरम न जाना।

साथ ही कबीर प्रारंभ में नाथसंप्रदाय से भी जुड़े थे, इसके के कारण उनकी भक्ति

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

में अंतर्मुखी रहस्यवाद के दर्शन होते हैं। उनके अनुसार ईश्वर अंतर्जगत में ही मौजूद है। उदाहरणार्थ:

कस्तूरी कुंडल बसै, मृग ढूंढे वन माहि,
राम घर-घर में बसे सबसे ढूंढे बाहर माहि।"

लेकिन कबीर नाथसंप्रदाय की ~~भावना~~ साधना की शुष्कता को पहचान कर उसे फटकारकर दूर हो जाते हैं- " ~~पखि~~ रैके कबीर भक्ति की/ काज रहे सब मारि।"

और वे कहते हैं-

"गगन पवना दोनों बिनसे
कहँ गयो जोग तुम्हारा।"

इसके अतिरिक्त कबीर

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

की भक्ति में ~~बाह्मुखी~~ भावनात्मक रहस्यवाद भी पर्याप्त मात्रा में दिखता है –

"तलफै बिनु बालम मोर जिया।
दिन नहीं चैन, रात नहीं निंदिया
तलफ- तलफ के भोर किया।।"

लेकिन कबीर की भक्ति अंतर्मुखी रहस्यवाद तक ही सीमित नहीं रहती वरन् उसमें बाह्मुखी रहस्यवाद भी उत्कृष्ट रूप में उजागर होता है यथा–

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल,
लाली देखन मैं चाल्या, मैं भी होग्या लाल।

इस प्रकार कबीर

दृष्टि The Vision

की भक्ति ~~जायसी~~ सूर व तुलसी की भक्ति से भिन्नता लिए हुए है। तुलसी के राम कबीर के विपरीत सगुण राम हैं तो वहीं सूर की कृष्णभक्ति में रहस्यवाद का अभाव है।

कहना न होगा कि कबीर ने कर्म, योग व भक्ति तीनों मार्गों पर उच्चता के स्तर को छुआ है जिसमें भक्ति मार्ग सबसे अन्यतम है। हालाँकि आचार्य शुक्ल जैसे कुछ समीक्षकों को इसमें शुष्कता नज़र आती है क्योंकि वे भक्तिभावना के सगुण रूप को स्वीकार करते हुए समीक्षा करते हैं।

(ख) राष्ट्रीय-स्वाधीनता-आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में 'राम की शक्तिपूजा' पर विचार कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

निराला 'राम की शक्तिपूजा' में अपने वैयक्तिक संघर्ष एवं राष्ट्रीय आंदोलन दोनों के मूल्यों का प्रक्षेपण करते हैं। 'शक्तिपूजा' वर्ष 1936 में लिखी गई कविता है अत: स्वाभाविक है कि इसके संदर्भ राष्ट्रीय - स्वाधीनता आंदोलन को छुए।

कुछ आलोचकों का मानना है कि छायावादी कवि अति रोमांटिकता के कारण तद्युगीन समस्याओं से जुड़ नहीं पाते। इन समीक्षकों में आचार्य शुक्ल सर्वप्रमुख हैं।

लेकिन डॉ. नगेन्द्र जैसे समीक्षक इन काव्यों को 'स्थूलता के प्रति

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सूक्ष्मता का विद्रोह' कहते हैं।

वहीं डॉ. निर्मला जैन तो 'शक्तिपूजा' को 'शक्ति काव्य' का दर्जा देती हैं। सूक्ष्म विश्लेषण करने पर पता चलता है कि 'शक्तिपूजा' के राम महात्मा गाँधी के प्रतीक हैं जो बार-बार मिल रही पराजय से थके हुए हैं। उसका कारण है कि शक्ति रावण अर्थात् ब्रिटिश सत्ता के साथ है। (है रावण जिधर उधर शक्ति)

लेकिन राम के समान गाँधी हार नहीं मानते।

एक और मन रहा राम का जो न थका।
जो नहीं जानता दैन्य नहीं जानता विनय॥

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

गाँधी भी राम की तरह आराधना का उत्तर इस आराधना से देते हैं।

साथ ही सीता मुक्ति एक संदर्भ में भारतीय स्वतंत्रता का ही प्रतीक है इसके लिए राम के समान गाँधी भी आत्मोत्सर्ग की बात करते हैं - 'करो या मरो'।

इसके अतिरिक्त 'शक्ति की मौलिक कल्पना' वास्तव में आमजन में निहित शक्ति को पहचानने का ही संदेश है जिसे गाँधी ने भारत-छोड़ो आंदोलन में पूर्णता प्रदान की।

वस्तुतः 'शक्तिपूजा' स्वतंत्रता आंदोलन का रोजनामचा भले न हो लेकिन स्वतंत्रता के मूल्यों को जरूर धारण करती है।

(ग) 'कुरुक्षेत्र' के काव्य-शिल्प पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

दिनकर ऐतिहासिक-पौराणिक कथाओं का प्रयोग राष्ट्रीय सांस्कृतिक अस्मिता एवं आधुनिक भावों एवं आदर्शों की स्थापना हेतु करते हैं। इस संदर्भ में 'कुरुक्षेत्र' सर्वप्रमुख काव्य है

'कुरुक्षेत्र' में भीष्म-युधिष्ठिर संवाद में खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है जो तत्समता लिए हुए है यथा -

"पाँच ही नर के द्वेष से,
हो गया संहार पूरे देश का"

काव्य-रूप के स्तर पर देखें तो महज एक ही घटना (महाभारत युद्ध पश्चात भीष्म व

युधिष्ठिर संवाद) के कारण इसे प्रबंध काव्य नहीं कहा जा सकता लेकिन खंड काव्य की संज्ञा दी सकती है।

नवजागरण की भावना से ओत-प्रोत होने के कारण ओज गुण से संयुक्त कविता है यथा –

"पुण्य है विच्छिन्न कर देना उसे,
बढ़ रहा तेरी तरफ जो हाथ है।"

इसी तरह अलंकारों के स्तर पर देखें तो उपमा एव रूपक की योजना संपूर्ण काव्य में विद्यमान है।

साथ ही प्रतीकात्मक रूप से कविता कई संदर्भों से जुड़ती है। उदाहरणत: निम्न पंक्तियों में यह कविता साम्यवाद के मूल्यों

दृष्टि The Vision

से भी जुड़ जाती है-

"जब तक मनुज मनुज का
सुख भाग नहीं सम होगा।
शमित न होगा कोलाहल
संघर्ष नहीं कम होगा।"

कहना न होगा कि 'कुरुक्षेत्र' संवेदना के स्तर पर जिस श्रेष्ठता के स्तर को छूती है शिल्प के स्तर पर भी उसी कुशल कवित्व का प्रमाण है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

4. (क) कबीर के काव्य में उपस्थित रहस्यवाद के विभिन्न रूपों पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

कबीर की जटिलता का एक आधार यह है कि उन पर कई सम्प्रदायों एवं दर्शनों का प्रभाव है। यह प्रभाव सबसे स्पष्ट रूप से दिखता है उनके काव्य में उपस्थित रहस्यवाद के विभिन्न रूपों में।

कबीर आरंभ में नाथ संप्रदाय से जुड़े थे और इसी कारण उनके काव्य में साधनात्मक रहस्यवाद के तत्व पर्याप्त मात्रा में दिखते थे ~~दिखते हैं~~ लेकिन भावनात्मक रहस्यवाद भी निम्न पंक्तियों में देखा जा सकता है—

"तलफै बिनु बालम मोर जिया,
दिन नहिं चैन रात नहिं निंदिया, तलफ-तलफ के भोर किया।"

लेकिन कबीर में एक

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

निश्चित परिधि में बाँधना लगभग नामुमकिन है। इसी कारण से उनके काव्य में भावनात्मक रहस्यवाद भी दिखता है। व

साधनात्मक रहस्यवाद -

साथ ही कबीर निर्गुण भक्त होने के कारण अव्यक्त, अलौकिक सत्ता की भक्ति ही मानते हैं और इसी कारण उनके काव्य में अंतर्मुखी रहस्यवाद भी दिखता है -

कस्तूरी कुंडल बसै, मृग ढूँढै वन माहिं,
राम घट-घट में बसै, सबै ढूँढै बाहर माहिं।

लेकिन कबीर सगुण व निर्गुण भक्ति के एकत्व को

![Drishti The Vision logo]

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

स्वीकार करते हैं -

"गुन में निरगुन, निरगुन में गुन
बाट छाँडि क्यूँ बहिए।"

इसी कारण उनके काव्य में बहिर्मुखी रहस्यवाद के भाव भी यत्र-तत्र दिख जाते हैं। उदाहरणतः

"लाली मेरे लाल की
जित देखूँ तित लाल।
जो लाली देखन मैं चली,
मैं भी हो गई लाल।"

कबीर के समान ही बहिर्मुखी रहस्यवाद जायसी के 'पद्मावत' में भी दिखता है। जायसी लिखते हैं -

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

"गढ़ तस बाँक जैसी तोरि काया,
पुरुष देखि ओहि के छाया।"

कबीर व जायसी दोनों अलौकिक, अव्यक्त सत्ता के साथ संबंध स्थापित करने या एकाकार के लिए गुरु की महत्ता को स्वीकार करते हैं-

कबीर - "आगे तै सतगुरु मिल्या
दीपक धारया हाथि।"

जायसी - गुरु सुआ जेहि पंथ दिखावा।

वस्तुत: कबीर का काव्य विरुद्धों के सामंजस्य का काव्य है जिसे एक परिधि या रहस्यवाद के एक रूप तक सीमित रखना असंभव है।

(ख) 'भारत-भारती' के 'काव्य-शिल्प' पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) 'ब्रह्मराक्षस' कविता में प्रयुक्त फैंटेसी शिल्प के स्वरूप और औचित्य पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मुक्तिबोध 'फैंटेसी के शिल्पी' कहे जाते हैं और 'ब्रह्मराक्षस' कविता में तो उन्होंने फैंटेसी के नए प्रतिमान गढ़े हैं।

मुक्तिबोध यथार्थवादी कवि हैं और वे उस यथार्थ के मूर्तन हेतु फैंटेसी का सहारा लेते हैं।

ब्रह्मराक्षस आजादी के बाद के भारतीय मध्यवर्गीय बुद्धिजीवि वर्ग का प्रतिनिधि है जो कि अपराध-बोध से ग्रसित है।

जीवन के यथार्थ से विच्छिन्न होकर निरुद्देश्य कामों में निर्लिप्त होने के कारण उपजे अपराध-बोध को मुक्तिबोध ने

दृष्टि The Vision

फैंटेसी में उतारा है-

"शहर के एक ओर
सूनी परित्यक्त बावड़ी....।"

इसी प्रकार इस अपराध-बोध से मुक्ति के असफल प्रयास को भी फैंटेसी के रूप में दिखाया गया है-

"धो रहा हूँ,
हाथ, मुँह, छाती बराबर
फिर भी मैल
फिर भी मैल।"

मुक्तिबोध मानते हैं कि मन एक रहस्यलोक है जिसमें चेतन, अवचेतन एवं अचेतन तीन सीढ़ियाँ हैं। उसी को फैंटेसी रूप में ब्रह्मराक्षस में

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

दिखाते हैं -

"एक चीना साँवला,
तीन सीढ़ियाँ
पानी में डूबी"

उसके पास खड़े और औदुम्बर उसी बुद्धिजीवि वर्ग की तटस्थता के द्योतक हैं।

इस प्रकार जिस मनु की समस्या को प्रसाद कामायनी में रहस्यवाद के स्तर पर ले जाते हैं उसी के समान ब्रह्मराक्षस की विश्वचेतस न बन पाने व गणितीय पूर्णता हासिल न कर पाने की व्यथा को मुक्तिबोध फैंटेसी के रूप में प्रस्तुत करते हैं। कारण है - मुक्तिबोध यथार्थ के कवि हैं।

खण्ड - ख

5. **निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:** **10 × 5 = 50**

(क) मंगलु बिंदु सुरंगु, मुखु ससि केसरि-आड़ गुरु।

इक नारी लहि संगु, रसमम किय लोचन-जगत।।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) नैनाँ अंतरि आचरूँ, निस दिन निरषौं तोहिं।

कब हरि दरसन देहुगे, सा दिन आवै मोंहि।।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ एवं प्रसंग

कबीर एक भक्त की ईश्वर से विरह में उपजी पीड़ा को मार्मिक रूप से अभिव्यंजित करते हैं। 'कबीर ग्रंथावली' (डॉ. श्यामसुंदर दास द्वारा संकलित) से उद्धृत उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में भी यही भाव दृष्टिगोचर होता है।

भावार्थ एवं विशेषार्थ

कबीर कहते हैं कि हरि के दरसन की अभिलाषा में आँखें सूखती जा रही हैं। प्रतिदिन केवल यही इंतज़ार रहता है कि हरि के दरसन कब होंगे। मुझे तो बस उसी दिन का इंतज़ार है।

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

काव्यगत वैशिष्ट्य

1. सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग
2. सूरदास की गोपियाँ भी उसी तरह हरि दर्शन की भूखी है—

"अँखियाँ हरि दर्शन की भूखी—"

3. दोहा छंद का प्रयोग।
4. अनुप्रास अलंकार - "निस दिन निरखौं—
5. उपमा - "नैना अंतरि ——
6.

(ग) है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भू-धर ज्यों ध्यान-मग्न, केवल जलती मशाल।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ एवं प्रसंग

'राम की शक्ति पूजा' में निराला का वैयक्तिक संघर्ष एवं आधुनिक मानव का विडंबनात्मक जीवन प्रक्षेपित हुआ है।

व्याख्येय काव्यांश में भी राम के मन में उपजी निराशा, पराजयबोध की भावना का चित्रण हुआ है।

भावार्थ एवं विशेषार्थ

निराला फोटोग्राफी तकनीक का प्रयोग कर चित्रित करते हैं कि अमावस्या की रात के समान चारों ओर घनघोर अँधेरा है और उसके कारण कोई मार्ग नज़र नहीं आ रहा। उसके साथ ही निरर्थकताबोध

दृष्टि The Vision

कि बादल गरज कर डरा रहे हैं
केवल एक मशाल जली हुई है

काव्यगत वैशिष्ट्य

(1) पंत ने निराला को 'ज्योति का कवि' कहा है मशाल उसी बात का प्रमाण है

(2) सांस्कृतिक पुनरुत्थानवाद के प्रभाव में संस्कृतनिष्ठ तत्सम खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है

(3) ~~[illegible]~~ 'शक्ति छंद' का प्रयोग निराला की उत्कृष्ट प्रयोगशीलता को दिखाता है

(4) निराला ने तुलसी के विपरीत राम को ~~[illegible]~~ लौकिक बना दिया है

(5) मानवीकरण अलंकार - "स्तब्ध है —
उत्प्रेक्षा - "भू-धर ज्यों —

(6) मशाल 'आशा' की प्रतीक है

(7) ध्वनि एवं दृश्य बिंब से बना
संश्लिष्ट बिंब

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(घ) त्याग, तप, भिक्षा? बहुत हूँ जानता मैं भी, मगर,
त्याग, तप, भिक्षा, विरागी योगियों के धर्म हैं;
याकि उसकी नीति, जिसके हाथ में शायक नहीं;
या मृषा पाषण्ड यह उस कापुरुष बलहीन का,
जो सदा भयभीत रहता युद्ध से यह सोचकर
ग्लानिमय जीवन बहुत अच्छा, मरण अच्छा नहीं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ एवं प्रसंग

'कुरुक्षेत्र' से अवतरित व्याख्येय पद्यांश के माध्यम से दिनकर ने आदर्श के सम्मुख यथार्थ की स्थापना की है और उसका माध्यम बना है यह युधिष्ठिर - भीष्म संवाद।

भावार्थ एवं विशेषार्थ

भीष्म युधिष्ठिर के मन में उपजे अपराध-बोध को मुक्त करने हेतु कहते हैं कि त्याग, तप, क्षमा जैसे ~~मूल्यों~~ मूल्य शासक के लिए नहीं है यह केवल वियोगियों या डरपोक लोगों का आभूषण है

इसी काव्य में भीष्म कहते हैं-
जीवन उनका नहीं युधिष्ठिर जो इससे डरते हैं,
यह उनका जो चरणरोप निर्भय होकर लड़ते हैं।

काव्यगत वैशिष्ट्य

1. ओज गुण युक्त खड़ी बोली जिसमें तत्सम शब्दों का बाहुल्य है।
2. प्रतीकात्मक भाषा
3. लयात्मकता बरकरार है।
4. अनुप्रास अलंकार-" त्याग, तप ____
5. काव्य रूप- 'खंड काव्य'
6. नवजागरण के मूल्यों से ओत-प्रोत काव्य
7. मैकियावली की 'रियल पॉलिटिक' की अवधारणा ध्वनित हो रही है।
8. वर्तमान में भी पाकिस्तान व चीन के 'डबल वॉर फ्रंट' का खतरा इस काव्य के औचित्य को साबित करता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ङ) सतगुरु की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उघारिया, अनँत दिखावनहार।।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ एवं प्रसंग

'कबीर ग्रंथावली' के 'गुरु के अंग' से उद्धृत इस काव्यांश में सतगुरु की महिमा का गान कबीर ने किया है।

भावार्थ एवं विशेषार्थ

कबीर कहते हैं की सतगुरु की महिमा असीमित है। उन्होंने मुझ पर कई उपकार किए हैं जैसे - मेरी संकीर्ण दृष्टि को वृहद बनाकर मुझे हरि को देखने की क्षमता से भर दिया है। इसी तरह जायसी भी गुरु का महत्व बताते हुए 'पद्मावत' में लिखते हैं -

"गुरु सुआ जेहि पंथ दिखावा।"

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

काव्यगत वैशिष्ट्य

1. सधुक्कड़ी भाषा जिसमें अनेक बोलियों के शब्द मौजूद हैं।
2. दोहा छंद
3. प्रतीकात्मक भाषा
4. लयात्मकता मौजूद है।
5. वर्तमान समय में शिक्षा के वाणिज्यीकरण के कारण ऐसे सद्गुरुओं की संख्या कम होती जा रही है।

6. (क) 'कामायनी मानव-मन एवं मानवता के विकास की कहानी है।' इस मत के संदर्भ में कामायनी की काव्य-वस्तु का अनुशीलन कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्रसाद ने कामायनी में पौराणिकता के चित्र में आधुनिक मानव के भावों एवं विडंबनाओं का रंग भरे हैं।

प्रसाद ने देव-सभ्यता एवं संस्कृति के ~~माध्यम~~ पतन के माध्यम से मानव के विकास की कहानी कही है।

इसके लिए प्रसाद देव सभ्यता में उभरी विलासिता की प्रवृत्ति को जिम्मेदार ठहराते हैं जो कि प्रकारांतर में मध्यकालीन सामंती समाज में पैदा हुई विलासिता का ही

दृष्टि The Vision

प्रतीक हैं। इन्हीं विलासिता के कारण समाज का पतन होता है। साथ ही समाज में फैली विषमता को भी वे नइयुगीन समाज की उथल-पुथल का कारण मानते हैं यथा-

"विषमता की पीड़ा से
हो रहा स्पंदित विश्व महान।"

कामायनी में मनु के मन में उपजी निराशा, निरर्थकताबोध, चिंता व बैचेनी वास्तव में आधुनिक मानव की ही समस्याओं का मंडन-मांडन है। आज का मानव भी देवों के समान अतियांत्रिकता व अतिभौतिकता

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

के कारण पतन की सूचना दे रहा है।

साथ ही श्रद्धा के माध्यम से प्रसाद ने मानव को नए आदर्श प्रस्तुत किए हैं। श्रद्धा की जीवकेंद्रित दृष्टि मानवता के अग्रगामी विकास को मार्गदर्शन करती है यथा-

"ये प्राणी जो बचे हुए हैं
इस अचला जगति के,
इनके कुछ अधिकार नहीं क्या,
ये सब ही हैं फीके।"

इसी प्रकार इड़ा के माध्यम से मानव मन की कामना को प्रस्तुत किया है। हालाँकि

दृष्टि The Vision

फ्रॉयड से भिन्न प्रसाद काम को प्रगति के उत्प्रेरक के रूप में मानते हैं ना कि वासना के रूप में।

सबसे महत्वपूर्ण प्रसाद ज्ञान-क्रिया-इच्छा के सामंजस्य के माध्यम से आनंदमूलक समरसतावाद का दर्शन प्रदान कर मानव मन की संतुष्टि का मार्ग प्रेषित करते हैं।

कहना न होगा कि प्रसाद की मानवतावादी आधुनिक कल्पनाशीलता ने मानव विकास के नए आदर्श स्थापित किए हैं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

दृष्टि The Vision

(ख) 'जायसी द्वारा प्रस्तुत नागमती का विरह-वर्णन हिन्दी साहित्य की अद्वितीय रचना है'- इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं? 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

जायसी ने 'नागमती के विरह' वर्णन के माध्यम से तत्कालीन मध्यकालीन समाज में नए आदर्श को प्रस्तुत किया।

आचार्य शुक्ल ने इसी से प्रभावित होकर कहा है कि

नागमती का विरह निर्लज्ज आशिकाना माशूकों का निर्लज्ज प्रलाप नहीं है। यह तो हिंदू गृहस्थ गृहिणी की विरहवाणी है।

जायसी ने विरह-वर्णन में बारहमासा पद्धति का प्रयोग कर हिंदी साहित्य के लिए नए

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्रतिमान प्रस्तुत किए हैं। उदा०

"चढ़ा असाढ़ गंगन घन गाजा।
साजा बिरह दुंद दल बाजा।"

नागमती का विरह-वर्णन लोकमर्यादा को ओढ़े हुए है। जिसके कारण उसकी स्वीकृति समाज में उच्च स्तर की है।

जायसी ने नागमती के विरह को प्रतीकात्मक रूप से मार्मिक रूप में अभिव्यंजित किया है।

"इस विरह में प्रकृति भी शामिल है।

पिउ से कहेउ संदेसड़ा, हे भौंरा हे कागा।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

तुलसी के यहाँ भी प्रकृति विरह में शामिल है-

हे खग, मृग तुम देखि सीता मृगनयनी

हालाँकि फारसी प्रभाव के कारण ऊहात्मक का प्रवेश हुआ है जैसे- 'दाहि कोयला भी कैत सनेहा।' लेकिन उसके बावजूद भी विरह-वर्णन उच्च कोटि का है।

इसी विरह वर्णन के कारण आचार्य शुक्ल ने जायसी को गुमनामी के अँधेरे से बाहर निकालकर हिंदी साहित्य की त्रिवेणी में सूर व तुलसी के समान रखा है।

(ग) 'सूर के उद्धव एक प्रकार से कृष्ण (शासक) एवं गोपियों (प्रजा) के बीच बिचौलिये नेता के प्रतीक हैं। इस रूप में यह प्रतीक आज भी उतना ही प्रासंगिक है।' क्या आप इस मत से सहमत हैं? अपना अभिमत सोदाहरण स्पष्ट करें। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सूरदास ने भ्रमरगीत में कृष्ण पर मौलिक उद्भावनाएं की हैं उनमें सबसे प्रमुख है उधो की भूमिका।

कृष्ण के मथुरागमन पर गोपियाँ उदास हो जाती हैं तो कृष्ण उधो को अपना संदेश लेकर गोपियों के पास भेजते हैं।

उधो वहाँ जाकर निर्गुण भक्ति का पाठ पढ़ाते है लेकिन गोपियाँ उसका

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मुँहतोड़ जवाब अपने तर्कों से देती है।

अंत में ऊधो हारकर कहते हैं –
"गयो तहाँ निरगुण कहिबे को भयो सगुण को चेरौ।"

लेकिन ऊधो मात्र बिचौलिये नेता न होकर अपना स्वतंत्र महत्त्व भी रखते हैं। गोपियों के साथ उनका तर्क-वितर्क उनकी कुशलता को दिखाता है।

ऊधो महज बिचौलिए

दृष्टि The Vision

नेता न बनकर स्वंय के
मूल्यों से संप्रक्त हों।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

7. (क) 'सूर का भ्रमरगीत नागर-संस्कृति के बरक्श लोक-संस्कृति की प्रतिष्ठा करता है।' इस कथन पर विचार कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) कामायनी के अंगीरस का निर्णय कीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) 'युद्ध और शांति की समस्या वास्तव में सामाजिक समता की समस्या है।'– कुरुक्षेत्र के आधार पर इस मत पर विचार कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

8. (क) "पीड़ित, शोषित, अपमानित जनमानस के दु:ख से जितना सरोकार कबीर का है, उतना भक्तिकाल के किसी अन्य कवि का नहीं।" इस कथन की मीमांसा कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) 'असाध्य वीणा' कविता में अज्ञेय मार्क्सवादी विचारधारा का खंडन और 'आधुनिकतावाद' का मंडन करते हैं। विचार कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) 'ब्रह्मराक्षस' कविता में कवि ब्रह्मराक्षस का सजल-उर-शिष्य क्यों होना चाहता है? विश्लेषण कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)